RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-10
October-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i10.028

नेहरू और समाजवाद

सत्यजीत कुमार

शोधार्थी (एम.ए.) हिन्दू कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समाजवाद आधुनिक समय की प्रमुख विचारधारा है। दर्शन विज्ञान, साहित्य, कला तथा जीवन के विविध क्षेत्रों में समाजवादी रूचि का प्रत्यक्ष या परोक्ष, स्वीकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ता है। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् का अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार एक ओर पूंजीवाद तथा दूसरी ओर समाजवाद के समर्थन की चेष्टाओं का इतिहास है। एक राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यक्रम के रूप में इसके अंतदर शोषण विरोध तथा सामाजिक न्याय की जो प्रेरणा है उसे आज भी उपेक्षा की दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता।

आधुनिक समाजवाद का जन्म 19वीं शताब्दी की घटना है जिसमें औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न परिस्थितियाँ इसके जन्म का कारण बनती है। इस काल में एक साहसी, चतुर मध्यवर्ग अपने आर्थिक प्रभुत्व के कारण राजनीतिक शक्ति हस्तगत करने में सफल हो जाती है। इसी काल में प्रकृति को नियमित करने के विभिन्न उपकरणों का भी निर्माण होता है। इस सभी घटनाक्रम के फलस्वरूप व्यक्तिगत संपति पर आधारित औद्योगिक पूंजीवाद का जन्म होता है। इस नवीन सभ्यता में मानवीय संबंधों का स्थान सर्वत्र आर्थिक रूप ले लेता है। इस प्रकार पूंजीवाद नेतृत्व ने समाज के जीवन में गुणात्मक विभेद पैदा कर दिए जिसका यदि एक सकारात्मक पक्ष है तो एक नकारात्मक पक्ष भी हैं समाजवाद, समाज के इस आर्थिक व नैतिक आधार को परिवर्तित करके व्यक्ति के जीवन में व्यक्तिगत नियंत्रण के स्थान पर सामाजिक–नियंत्रण स्थापित करने वाला सिद्धान्त व आंदोलन दोनों है। मूलतः यह वह आंदोलन है जो कि उत्पादन के मुख्य साधनों के सामाजीकरण पर आधारित वर्ग विहीन समाज स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। इसका उद्देश्य श्रमजीवी वर्ग को मुख्य आधार बनाकर वर्ग व्यवस्था को समाप्त करना है।

नेहरू और मार्क्सवादी लेनिनवादी साम्यवाद

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वितीय विश्वयुद्ध तक मार्क्सवादी लेनिनवादी–साम्यवाद के प्रति विशेष रूप से आकृष्ट रहे, लेकिन विश्वयुद्ध के बाद यह प्रभाव क्षीण होने लगा और उनके विचारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया। यद्यपि मार्क्स व लेनिन की रचनाओं का नेहरू जी पर गहड़ा असर पड़ा था। इस विषय में वे लिखते हैं कि ''इसने इतिहास व मौजूदा जमाने के मामलों को एक नई रोशनी में देखने में बड़ी मदद पहुंचाई। इतिहास व समाज के विकास के लम्बे सिलसिले में एक मतलब और आपस का रिश्ता जान पड़ा और भविष्य का धुंधलापन कुछ कम हो गया। सोवियत यूनियन के अमली कारनामे में कुछ कम बड़े न थे। कुछ बातें वहाँ जरूर ऐसी दिखाई दी जिन्हें मैं पसंद नहीं कर पाता था या समझ नहीं पाता था पर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वक्ती बातों से फायदा उठाने की या महज ताकत के बल पर मकसद हासिल करने की कोशिश से इसका ताल्लुक है। लेकिन ऐसी सूरत पैदा होने के बावजूद इसमें मुझे शक नहीं रहा कि सोवियत इन्कलाब ने हमारे समाज को बल्लियों आगे बढ़ाया है, और ऐसी चमकीली ज्योति पैदा की है जिसे दबाकर बुझाया नहीं जा सकता। इसने एक नई तहजीब दी जिसकी तरफ दुनिया का तरक्की करना लाजमी है।''

मार्क्स के मत को नेहरू जी स्वीकार करते हुए कहते है ''वर्ग संघर्ष की पूरी धारणा यह है कि आज की दुनिया पहले ही की तरह वर्गों के संघर्ष पर आधारित है। किसी खास वर्ग का दूसरों वर्गों पर प्रभुत्व होता है। इस हकीकत को पहचान कर इससे छुटकारा पाने की कोशिश करना शत्रुता और घृणा को बढ़ावा देना नहीं है। समाजवाद का उद्देश्य है वर्गों को मिटाकर और केवल एक ही वर्ग रखकर वर्ग संघर्ष को समाप्त करना।''

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पं. नेहरू मार्क्सवाद व साम्यवाद से दूर होते चले गए और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा उनके हृदय में अधिकाधिक धर करती चली गई। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को भारत के लिए सबसे अनुकूल माना और सर्वथा लोकतांत्रिक ढंग से भारत को समाजवाद के पथ पर अग्रसर करने की भरपूर चेष्टा की। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व भी नेहरू जी विशुद्ध साम्यवादी कमी नहीं बन सके। जैसा कि उन्होंने अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया है ''मैं एक साम्यवादी नहीं हूँ, क्योंकि मैं साम्यवादियों की साम्यवाद को एक पवित्र धर्म मानने की प्रवृत्ति का विरोधी हूँ।''

नेहरू जी मार्क्सवाद की ओर सबसे अधिक इसलिए आकृष्ट हुए क्योंकि वह इतिहास और आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करने की वैज्ञानिक पद्धति प्रस्तुत करता है। उन्होंने मार्क्स की इस धारणा का समर्थन किया कि एक पूंजीवादी समाज में एक सच्चा लोकतंत्र नहीं पनप सकता, तथा आधुनिक साम्राज्यवाद उग्र राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष का जनक भी पूंजीवाद ही है। नेहरू जी का इस प्रकार मार्क्सवादी सामाजिक चिंतन द्वितीय विश्वयुद्ध तक बना रहा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लेकिन बाद में नेहरू जी के चिंतन में परिवर्तन आया। उनका आलोचनात्मक मस्तिष्क मार्क्सवाद और लेनिनवाद की मदान्धता के प्रति विद्रोह कर बैठा। सोवियत संघ में हिंसा का जोर प्रदर्शन हुआ उससे पंडित जी के मन और मस्तिष्क पर गहरा धक्का लगा। सोवियत संघ में मानव जीवन को जिस प्रकार कठोर शिकंजे में कस दिया गया, उसे नेहरू जी का लोकतांत्रिक हृदय सहन नहीं कर सका। नेहरू जी आजीवन यह कमी नहीं विश्वास कर सके कि अच्छे साध्यों की प्राप्ति के लिए बुरे साधनो ंका आश्रय लिया जाए अथवा बुड़ाई का दमन बुड़ाई से किया जाए।

नेहरू जी ने अपने जीवन के अंतिम समय में मार्क्सवारी लेनिनवादी साम्यवाद की एक और भी दृष्टि से दूर हो गए। जिसमें वे अपनी धर्म निरपेक्षता के होते हुए भी मानव जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को स्वीकार करने लगे, जबकि साम्यवाद में इन मूल्यों का कोइ महत्व नहीं है।

नेहरू जी के समाजवादी चिंतन को हम एक विकास के रूप में देख सकते हैं। इसका एक कारण भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियाँ भी है। नेहरू जी निश्चय ही देश की उन चिंतकों में है, जिन्होंने अपनी समाजवादी विचारधारा को अपने लेखन में स्पष्ट करने की चेष्टा की। कुछ विद्वानों का यह माना है कि नेहरू जी का समाजवादी चिंतन बहुत स्पष्ट नहीं है वह उलझन से भरा हैं रफीक जकारिया ने नेहरू के सम्मान में एक पुस्तक का संपादन किया है, इसमें प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक ई.एन.एस. नम्बूरीवाद कहते हैं कि– ''नेहरू जी ने 1959 में केरल के साम्यवादी सारकार को बहुत अप्रजातांत्रिक तरीके से गिराया यह उनकी प्रजातांत्रिक भावना के प्रति संदेह उत्पन्न करता है। माइकल ब्रेचर ने अपने ग्रंथ नेहरू ए पोलिटिकल बायोग्राफी के पोट्रेट ऑफ लीडर शीर्षक अध्याय में नेहरू की समाजवादी विचारधारा के कुछ अंतर्विरोधों का उल्लेख किया है।

नेहरू, मार्क्स एवं गांधी

जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक दर्शन मेंदो विचारधाराएँ साथ साथ चली है और यह एक दूसरे को प्रभावित करती हुई विचित्र रूप से समन्वित होती हैं यह दो धाराएँ है गांधी व मार्क्स की। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इन दोनों के कुछ प्रमुख सिद्धांतों को चयनित करके एक तीसरे दर्शन की स्थापना की। भौतिक जीवन और इतिहास के मीमांसा का अर्धमूलक दृष्टिकोण मानव समाज में परिवर्तन और प्रगति पर उसका आग्रह, वास्तविक लोकतंत्र के लिए सामाजिक समता की अपरिहार्यता, आर्थिक नियोजन की वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा सुख–शांतिपूर्ण जीवन की संभावना आदि के सिद्धांत पंडित जी ने मार्क्स से लिए थे। वहीं, अहिंसा की मानवोचित धारणा, साध्य–साधनों की एकरूपता का सिद्धांत और जीवन तथा राजनीति में नैतिकता के निश्चित महत्व की मान्यता जैसे सिद्धांत गांधी से लिए थे।

नेहरू जी इनके कुछ सिद्धांतों से असहमत भी थे। हिसा के प्रश्न जो मार्क्सवाद के साथ उनके मतभेद का मूलाधार बताया जाता है। किसी समय ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं नेहरू जी भी इसी धारणा के समर्थक रहे थे। किंतु समय के साथ उनके अनुभव की वृद्धि तथा विश्व परिस्थितियों में महान परिवर्तन के परिणामस्वरूप अब वे इस स्थापना को पूर्ण रूप से मानने को इच्छुक नहीं थे। जहाँ तक हिंसा का प्रश्न है वे उसे गांधी जी के समान मूलतः अनैतिक नहीं मानते थे। विशेष स्थितियों में उसकी परिसीमित आवश्यकता एवं उपयोगिता हो सकती है। इस विषय में वे स्वयं कहते हैं कि ''हिंसा बुरी चीज है लेकिन दासता उससे भी बुरी है। अहिसां के महान प्रवर्तक ने स्वयं को हमें यह सीख दी है कि कायरवश लड़ने से इंकार करने से बेहतर है कि युद्ध किया जाए।''

भारत के समाजवादी विचारकों एवं आंदोलनों पर नेहरू जी का प्रभाव

आचार्य नरेन्द्रदेव एवं पंडित नेहरू– नेहरू देव नैतिक समाजवादी थे। उन्हें नैतिक मूल्यों की प्राथमिकता में विश्वास था। वे समाजवाद को एक सांस्कृतिक आंदोलन भी मानते थे इसलिए उन्होंने समाजवाद के मानववादी आधार पर बल दिया। नरेन्द्र जी और पंडित नेहरू होमरूल लीग के काम के सिलसिले में एक दूसरे के संदर्क में आए। दोनों ने लगभग 30 वर्ष तक एक मंच से देश की सेवा की। नरेन्द्र जी के अनुसार जवाहर लाल जी की एक विशेषता जो उन्होंने अहमद नगर जेल में देखी वह यह थी कि नेहरू जी दूसरों के विपरीत तर्क को भी बड़े ध्यान से सुनते थे और यह जानने का प्रयास करते थे कि वह इससे कहां तक सहमत हो सकते हैं। नरेन्द्र जी के अनुसार पंडित नेहरू जी समाजवादी भी थे और अंतर्राष्ट्रीय भी। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के वर्गजन्य संगठन के भी वे सन् 1929 में अध्यक्ष रहे और यह उन पर समाजवादी प्रभाव ही था जिससे उन्हें सन् 1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेस में मौलिक अधिकारों संबंधी संकल्प रखकर उसे पारित कराने के लिए उत्प्रेरित किया था।

नेहरू जी सामाजिक आंदोलन के आदर्श के समर्थक तथा लोकतंत्र और स्वतंत्रता के लिए नियोजन में विश्वास रखते थे। उनका मत था कि उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण किये बिना जनता को लाभ नहीं पहुँचाया जा सकता किन्तु फिर भी वे ऐसा कुछ नहीं करना चाहते थे जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर कोई अंकुश लगे।

जयप्रकाश नारायण एवं पंडित नेहरू

महात्मा गांधी जयप्रकाश नारायण को भारतीय समाजवाद पर सबसे बड़ा अधिकारिक विद्वान मानते थे। जयप्रकाश बाबू ने अपनी पुस्तक 'समाजवाद क्यों?'' के आरंभ में बताया कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न

होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है जिसका उद्देश्य हैः– पद संस्कृत एवं अवसर की विषमताओं को दूर किया जाए, जीवन के श्रेष्ठ वस्तुओं के कष्टमय अहसान वितरण को समाप्त किया जाए जयप्रकाश नारायण 'सोशल वैरियेशन' पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करने के बाद, 1929 में अमेरिका से शिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटते हैं और जवाहर लाल नेहरू के कहने पर उन्होंने मजदूर खोज विभाग का काम सम्भाला और बाद में कांग्रेस की मंत्री भी बने। साम्यवादियों को संगठित करने के लिए जयप्रकाश ने पूरे देश का दौर किया। 1936 में जवाहरलाल नेहरू ने समाजवाद के बढ़ते प्रभाव को देखकर कांग्रेस कार्यसमिति में तीन समाजवादियों सम्मिलित किया। आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण एवं अच्युत पटवर्धन है।

नेहरू जी का ट्रेड यूनियन कांग्रेस पर प्रभाव

नेहरू जी की समाजवादी विचारधारा का प्रभावक्षेत्र बहुत विस्तृत था। इस विचारधारा में मजदूर संगठनों और विकास सभाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे अपनी पुस्तक 'मेरी कहानी' में मजदूरों के श्रम संगठन आंदोलन के समाजवादी रूप का उल्लेख करते हैं और अपने को समाजवादी कार्यकर्त्ता कहते हैं देश में पहला मजदूर संगठन 1920 में बना जिसमें नेहरू जी ने योगदान दिया तबसे इनका निरंतर विकास होता रहा। 1928 का वर्ष मजदूर संगठनों की विकास का महत्त्वपूर्ण पड़ा है नेहरू जी कहते हैं–

मजदूर संगठनों की हलचल ज्यादा बढ़ गई थी, वह एक मजबूत और प्रतिनिधिक जमात थी। न सिर्फ उसकी तादात और उसके संगठन में काफी तरक्की हुई थी बल्कि उसके विचार भी ज्यादा लड़ाकू और ज्यादा गरम हो गए थे। अक्सर हड़तालें होती थी और मजदूरों में वर्ग चेतना जोर पकड़ रही थी। नेहरू जी इस बात को समझते हैं कि जब तक सामाजिक चेतना नहीं होगी तब तक समाजवाद की स्थापना कठिन है। इस समय तक औद्योगिक विकास काफी हो गया था, इसलिए किसान वर्ग के साथ–साथ मजदूर वर्ग की संख्या भी काफी बढ़ गई थी। इन मजदूरों में अपने अधिकारों के प्रति तथा राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जब तक जागरूकता नहीं होगी तब तक समाजवादी व्यवस्था की स्थापना नहीं हो सकती। इसी कारण नेहरू ने श्रमिक संगठनों को स्वीकार किया। जब तक वर्ग चेतना नहीं होगी शोषण का अंत भी तब तक नहीं हो सकता। नेहरू जी ने इन श्रमिक संगठनों का समाजवाद की स्थापना में सही उपयोग करने का प्रयत्न किया। साथ ही इन आंदोलनों व संगठनों के विकास पर नेहरू का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है।

नेहरू द्वारा संविधान सभा में समाजवाद के लिए संघर्ष

संविधान सभा का गठन – संविधान सभा आम जनता द्वारा नहीं चुनी गई थी, लेकिन जवाहरलाल जी की धारणा थी कि क्रांतिकारी स्थिति में यह अपनी शक्ति और अपने संकल्प को समेट सकती थी परोक्ष रूप से इसने जनता की भावना को स्पष्ट किया। संविधान सभा में नेहरू सबसे चमत्कारी नेता थे। उनमें जनमत को प्रभावित करने की अपार शक्ति थी लेकिन इन सबसे परे उनमें एक महान गुण था कि वह लोकतंत्र में अटूट निष्ठ रखते थे। उन्हें हमेशा यह ध्यान रहता था कि संविधान सभा में जो भी निर्णय हो उनके साथ लोकतंत्र की सर्वोत्तम परम्परा एवं मानदंड जुड़े थे। नेहरू इस बात की प्रबल समर्थक थे कि सभी मामलों पर पूरी और खुली बहस और यथासंभव सर्वसमति से था लगभग सर्वसम्मति से निर्ण किए जाए। यह भी उल्लेखनीय है कि नेहरू संविधान सभा की तीन अतिमहत्वपूर्ण समितियों के अध्यक्ष रहे। ये समितियाँ थीं– रियासतों संबंधी समिति, संघ शक्ति समिति और संघ संविधान समिति। संघ संविधान समिति का उद्देश्य संघ शक्ति समिति के उद्देश्यों का निर्धारण करना था।

संविधान सभा के प्रथम अधिवेशन के पांचवे दिन 13 दिसंबर 1946 को पं. नेहरू ने ऐतिहासिक 'उद्देश्य प्रस्ताव' को प्रस्तुत करते हुए संविधान सभा में अपने कई भव्य और अविस्मरणीय भाषणों की श्रृंखला का पहला भाषण दिया। उनके भाषण में यह प्रतीत होता है कि वे संविधान में समाज के हरेक वर्ग को समानता और अधिकार दिलाने की वकालत करते हैं।

उद्देश्य प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से 'समाजवाद' शब्द को समाहित करके उसकी व्याख्या नहीं की गई थी लेकिन समाजवादी समाज के सारे गुण संविधान में उल्लेखित थे। संविधान सभा में गरीब वर्ग के हित के लिए नेहरू जी ने कहा– ''भारत की सेवा से उन करोड़ों मनुष्यों की सेवा होती है जो पीड़ा भोग रहे हैं। उसका तात्पर्य गरीबी और अज्ञान तथा रोग और अवसर की विषमता को समाप्त करना है।''

संदर्भ सूचीः–

1. नेहरू, जवाहर लाल, 'मेरी कहानी', पृ. 373, 365
2. कौसिक, पी.डी., द कांग्रेस आइडियोलॉजी एंड प्रोग्राम, पृ. 127
3. जकारिया रफीक, ए स्टडी ऑफ नेहरू, पृ. 202
4. दीक्षित, जगदीश चंद्र, आचार्य नरेन्द्र देव
5. शंकर, श्रीमति शोभा, आधुनिक भारतीय समाजवादी चिंतन
6. उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए : नेहरू संविधान सभा में सी.ए.डी. खंड–1, पृ. 57–65

RRIJM 2015, All Rights Reserved